उपसंहार

मुंशी प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में ग्राम समस्याओं को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। वास्तव में प्रेमचंदजी का साहित्य ग्रामों की आर्थिक विपन्नता में ग्रस्त, नग्न-अर्धनग्न, भूखे-प्यासे, मृत्यु के मुख में पडे, जीवन की चाह को ललकारते हुए असंख्य नर-नारियों की करुण-मर्मस्पर्शी कहानी है।

'गोदान' का होरी कृषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। उसके जीवन की समस्याएँ - ग्राम जीवन की समस्याएँ हैं, जो 'गोदान' में उभरी हैं। ग्राम की संपूर्ण समस्याएँ होरी के जीवन में मूर्त होकर आयी हैं। ग्राम की परंपराएँ पूरे समाज में व्याप्त हैं। ग्राम की समस्याएँ युग-परिस्थितियों की देन हैं - यह सत्य होते हुए भी यह नहीं भुलाया जा सकता कि इन समस्याओं के मूल में स्वयं ग्रामीण जनता भी किसी न किसी रुप में उत्तरदायी है।

होरी का जीवन आर्थिक संघर्षों की करुण-कहानी है। जीवन-निर्वाह के लिए भोजन की समस्या सबसे भयंकर है। भोजन दोनों जून न सही, एक जून तो मिलना चाहिए। भरपेट न मिले, आधा पेट तो मिले। पेट भरने की समस्या जहाँ ऐसा भयंकर रुप धारण कर चुकी हो, वहाँ महाजन भी मुँह फेर लेता है —

'सामने जो कुछ मोटा-झोटा आ जाता है, वह खा लेते हैं, उसीतरह जैसे इंजिन कोयला खा लेता है।'[१]

'यह दशा कुछ होरी ही की न थी। सारे गाँवपर यह विपति थी। ऐसा एक आदमी भी नहीं, जिसकी रोनी सूरत न हो, मानो उनके प्राणों की जगह

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९४ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

वेदना ही बैठी उन्हें कठपुतलियों की तरह नचा रही हो।' [१]

'गोदान' में ग्राम समस्या के अन्तर्गत शोषण की समस्या प्रमुख रूपसे चित्रित की गयी है। शोषण की समस्या का मूल कारण आर्थिक विषमता थी, जिसके लिए शोषक ही नहीं, शोषित भी उत्तरदायी था। शोषण की समस्या के समाधान में शोषक ही नहीं, शोषित भी सहायक थे। एक छोर पर शोषित है और दूसरे पर शोषक है और इन दोनों छोरों को मिलानेवाली अर्थ की श्रृंखला है। इस श्रृंखला को तोडने की शक्ति सरकार के हाथ में थी। सम्पति की बेडी, जो समाज का अभिशाप थी, सरकार के हाथों एक झटके से तोडी जा सकती थी, यदि वह जमींदारों से उनके इलाके छीन उन्हें अपने परिश्रम की रोटी खाने के लिए विवश कर देती - 'गोदान' के रायसाहब होरी के सामने कहते हैं —

'मैं तो कभी - कभी सोचता हूँ कि अगर सरकार हमारे इलाके छीनकर हमें अपनी रोजी के लिए मेहनत करना सिखा दे, तो हमारे साथ महान उपकार करे, और यह तो निश्चय है कि अब सरकार भी हमारी रक्षा न करेगी।' [२]

'गोदान' में होरी इस शोषण के चक्र के साथ - साथ घूम रहा है और घूमता ही जाता है, जब तक कि उसके श्वासों का चक्र ही नहीं रुक जाता। हार-हार तब तक ही खेला जा सकता है जब तक नियति जीवन को खिलाती है। महाजन के शोषण और अत्याचार को 'हाँ सरकार' कहकर स्वीकार कर लेने वाला 'गोदान' की नई पीढी के रूप में गोबर जन्म लेता है। वह दातादीन से स्पष्ट कहता है कि यह अनीति है। यह कहाँ तक उचित है कि मूल से तिगुना सूद लिया जाए। सूद ही ऋण का बोझ बढा देता है। तीन सौ रुपयों पर सौ रुपये सूद लग जाता है और तीस रुपये तीन साल में सौ रुपये हो जाते हैं। तीस का

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९४ - सरस्वती प्रेस, २। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१५ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

कागज लिखने पर कहीं पच्चीस रुपये मिलते हैं और वे ही तीन-चार साल में सौ बन जाते है।

यह लगान समस्या भयंकर रुप धारण करती है। किसान अनपढ है। वह कानून नहीं जानता। वह लगान चुका भी देता है तो रसीद नहीं मिलती। जो हेकड और समझदार किसान होता है रसीद उन्हीं को मिलती है और शेष पर लगान लेकर भी तकाजे किए जाते थे। स्टाम्प कभी-कभी बाद में लिखा जाता है, जब तीस रुपये में तीन साल में सत्तर रुपये सूद के चढ जाते हैं। इस समस्या से मुक्त होने का एक ही साधन था और वह था खेती की उपज और उससे मिलनेवाला रुपया। खेती कभी भी जमकर लगातार दो साल भी नहीं हो पाती थी और ऋण की राशि लगातार बढती जाती थी। किसी साल खेती अच्छी होती तो लेनदार चारों ओर से चिपट जाते।

होरी के मन में खेती का मोह, उसकी मर्यादा भावना, सहिष्णुता धैर्य तथा पौरुष-सब कुछ परिस्थितियों के हाथों समाप्त होने लगा। गोबर खेती की झूठी मर्यादा तोडकर शहर भाग जाता है। शहर में जाकर वह मजदूर बन जाता है और होरी गाँव में मर्यादा का भार ही ढोता रहता है।

मुंशी प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में यह लिखा है कि ग्रामों में संयुक्त परिवार के टूटने से आर्थिक स्थिति बिगड जाती है और किसानों के लिए और एक नई समस्या उपस्थित हो जाती है। होरी का परिवार ही नहीं विश्रृंखलित होता, गाँवों में परिवार विघटन तेजी से हो रहा था। मालती मेहता के साथ गाँवों में जाकर स्पष्ट देखती है कि पारस्परिक फूट और वैमनस्य के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। गाँव में दो भाई भी साथ नहीं रह पाते। 'गोदान' में होरी के भाई अलग हो जात हैं —

'हीरा-बहू अपने घर की मालकिन थी। उसी के विद्रोह से भाइयों में अलगौझा हुआ था।'[१]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२७, सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -२

हीरा होरी की गाय को ईर्ष्या - द्वेष के कारण माहुर दे देता है। पुलिस आती है परंतु होरी थानेदार को रिश्वत देकर घर की लाज रखना चाहता है। हीरा भाग जाता है। ऐसे में पुनिया की रक्षा करना उसका ही तो काम है। अंतर की अनुराग अलगोझा की दीवार भी लांघ जाता है। अपने भाई कितने ही बुरे हों, हैं तो अपने ही भाई। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि भोले-भाले अनपढ किसानों से पुलिस अकारण ही रिश्वत लेने तैयार हो जाती है। गाँव के मुखिया भी उनकी सहायता करते हैं - ग्रामों में यह बातें प्राय: देखी जाती हैं —

` नेताओं में सलाह होने लगी। दारोगाजी को क्या भेंट किया जाय ? दातादीन ने पचास का प्रस्ताव किया। झिंगुरीसिंह के अनुमान में सौ से कम पर सौदा न होगा। नोखेराम भी सौ के पक्ष में थे। और होरी के लिए सौ और पचास में कोई अन्तर न था। इस तलाशी का संकट उसके सिर से टल जाय। पूजा चाहे कितनी ही चढानी पडे। मरे को मन-भर की लकडी से जलाओ, या दस मन से , उसे क्या चिन्ता ` [१]

धर्म होरी के जीवन का शोषण करता है, परंतु वह शांत भाव से सब कुछ स्वीकार कर लेता है। दातादीन होरी को ऋण देता है किन्तु सूद में ईमानदारी उठाकर ताक में धर देता है। वह धर्म के नाम पर होरी को धमकाता है और होरी के पेट में धर्म की क्रान्ति छिड जाती है —

` लेकिन ब्राह्मण के रुपए। उसकी एक पाई भी दब गई, तो हड्डी तोडकर निकलेगी। भगवान न करें कि ब्राह्मण का कोप किसी पर गिरे। बंस में कोई चिल्लू-भर पानी देनेवाला, घर में दिया जलानेवाला भी नहीं रहता। उसका धर्म-भीरु मन त्रस्त हो उठा। उसने दौडकर पण्डितजी के चरण पकड लिए और आर्त स्वर में बोला - महाराज, जब तक मैं जीता हूँ, तुम्हारी एक-एक पाई चुकाऊँगा। लडकों

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९५ - सरस्वती प्रेस,
२।४३, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-२

की बातों पर मत जाओ। मामला तो हमारे-तुम्हारे बीच में हुआ है। वह कौन होता है ?'[१]

होरी की धर्म भीरुता ही उसे दयनीय बना देती है। डाँड चुकाने में भी वह बिरादरी के भय से विवश है —

' हम सब बिरादरी के चाकर हैं, उसके बाहर नहीं जा सकते। वह जो डाँड लगाती है, उसे सिर झुकाकर मंजूर कर। नक्कू बनकर जीने से तो गले में फाँसी लगा लेना अच्छा है। आज मर जायँ, तो बिरादरी होतो इस मिट्टी को पार लगाएगी ? बिरादरी ही तारेगी तो तरेंगे। पंचों, मुझे अपने जवान बेटे का मुँह देखना नसीब न हो, अगर मेरे पास खलिहान में अनाज के सिवा और कोई चीज हो। मैं बिरादरी से दगा न करूँगा।'[२]

यह धर्म होरी के जीवन में इतनी जडें जमा चुका है कि वास्तविक स्थिति उसे उभरने नहीं देती। पूर्वजन्म के कर्मों का फल ही है कि उसे इतना दु:ख उठाना पड रहा है भाग्य में जो लिखा है, उसे भोगना ही है। ऐसे अंधविश्वास उसे मृत्यु के हाथों सौंप देते हैं। होरी जीवनभर संघर्ष करता है और जीवन के अंत में वह धर्म के हाथों उपहास का पात्र बनता है।

वस्तुत: प्रेमचंदजी ने गोदान में किसान महाजन संबंध को ही प्रमुख रुप से चित्रित किया है। एक ओर रायसाहब आदर्शवादी सिध्दान्त रखते हुए भी बेगार लेना नहीं छोडते और झूठे ऐश्वर्य तथा मान-प्रदर्शन के लिए किसानों को चूसने में नहीं शर्माते। दूसरी ओर पटेश्वरी, दातादीन, झिंगुरीसिंह, मंगरुशाह जोंक की तरह अन्त तक उसका शोषण करते हैं। इसतरह ग्राम के सभी किसान

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१८१ - सरस्वती प्रेस, रा ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०८ - सरस्वती प्रेस, रा ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

अभाव-ग्रस्त जीवन व्यतीत करने पर विवश हैं। प्रेमचंदजी ने होरी के माध्यम से अभाव की समस्या को इसप्रकार अभिव्यक्त किया है —

` पाँच साल हुए, यह मिर्जई बनवाई थी। धनिया ने एक प्रकार से जबरदस्ती बनवा दी थी, वही जब एक बार काबुली से कपडे लिये थे, जिसके पीछे कितनी सौंसत हुई, कितनी गालियाँ खानी पडीं। और कम्बल उसके जन्म से भी पहले का है। बचपन में अपने बाप के साथ वह इसी में सोता था, जवानी में गोबर को लेकर इसी कम्बल में उसके जाडे कटे थे और बुढापे में आज वही बूढा कम्बल उसका साथी है, पर अब वह भोजन को चबानेवाला दाँत नहीं, घुलनेवाला दात है।`[१]

अंत: इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है और यह स्थिति ग्रामों के जमींदारों तथा महाजनों ने अपने स्वार्थ के लिए बना रखी है।

प्रेमचंदजी ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि जो यथार्थवादी है उसे भारतीय किसान परम्परागत मानते हैं। कारण ग्रामीणों के शोषण, आर्थिक दुरावस्था तथा पिछडेपन का कारण परम्परानुगामिता भी है।

प्रेमचंदजी ने ग्रामों में रहनेवाले किसानों के जीवन की केवल समस्याओं का ही चित्रण नहीं किया अपितु उनके समग्र पक्षों की यथार्थ अभिव्यक्ति भी की है। उन्होंने किसानों की निर्धनता, मूर्खता, अशिक्षा, रुढिप्रियता, अंधविश्वास, गन्दगी, हठ धर्मिता, आपसी फूट, वैमनस्य, भेदभाव, पूजापाठ, नारी समस्या, मानवी मूल्य विघटन आदि का ही नहीं, उनकी उदारता, सरलता, सहजता, धर्मभीरुता, सहानुभूति का विश्वसनीय वर्णन किया है।

इसके अतिरिक्त ` गोदान` में राजनीतिक बातों को रायसाहब और खन्ना आदि राष्ट्रवादी पात्रों के वर्णन से स्पष्ट कर दिया है। जमींदार रायसाहब

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१००- सरस्वतीप्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

तथा पूँजीपति खन्ना को राष्ट्रवादी बनाकर प्रेमचंदजी ने तथाकथित राष्ट्रवादियों का उपहास किया है। इसप्रकार मुंशी प्रेमचंदजीने अन्त: बाह्य दोनों प्रकार की परिस्थितियों को अत्यंत यथार्थ रुप में उपस्थित कर दिया है। उन्होंने ग्रामों को धीरे-धीरे नगरों में आबाद होते देखा, किसानों को मजदूरों में परिणत होते देखा और उन समग्र परिस्थितियों का होरी तथा गोबर की जीवन-गाथा के रुपमें चित्रित किया।

प्रेमचंदजी ने `गोदान' में ग्रामों की विभिन्न बातों को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन सभी बातों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। होरी का संपूर्ण परिवार इनका प्रतिनिधित्व करता है। महाजन - किसान संबंध, शोषित-शोषक संबंध, धर्म का आडम्बर, विवाह सम्बन्धी प्रथाओं आदि को प्रेमचंदजीने अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

••